भारत छोड़ो आंदोलन 1942: जन-विद्रोह, औपनिवेशिक संकट और स्वतंत्रता की अंतिम निर्णायक अवस्था का समालोचनात्मक अध्ययन

डॉ. अनुपम मित्र
सहायक आचार्य
इतिहास विभाग
राजकीय महाविद्यालय, स्वार, रामपुर(उ.प्र.)

सारांश

भारत छोड़ो आंदोलन 1942 भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक चरण था, जिसने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध व्यापक जनविद्रोह को जन्म दिया। यह अध्ययन इस आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, द्वितीय विश्व युद्ध से उत्पन्न औपनिवेशिक संकट, क्रिप्स मिशन की असफलता तथा महात्मा गांधी के नेतृत्व में दिए गए "करो या मरो" के आह्वान का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। आंदोलन की प्रमुख विशेषता इसकी व्यापक जनसहभागिता और स्वतःस्फूर्त स्वरूप था, जिसने इसे केवल एक राजनीतिक अभियान न रहकर एक सामाजिक क्रांति का रूप प्रदान किया। यद्यपि आंदोलन तत्काल स्वतंत्रता प्राप्त करने में सफल नहीं हुआ, फिर भी इसने ब्रिटिश शासन की वैधता को गहराई से कमजोर किया। यह अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि भारत छोड़ो आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रवाद को अंतिम निर्णायक दिशा प्रदान की और स्वतंत्रता की प्रक्रिया को तीव्र किया।

कुंजी शब्द: भारत छोड़ो आंदोलन, जनविद्रोह, औपनिवेशिक संकट, राष्ट्रवाद, जनसहभागिता

1. परिचय

बीसवीं शताब्दी के चालीस के दशक में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एक ऐसे निर्णायक मोड़ पर पहुँचा, जहाँ औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष अपनी चरम अवस्था में था। यह वह समय था जब राजनीतिक असंतोष, आर्थिक संकट और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियाँ एक साथ मिलकर एक व्यापक जनविद्रोह की पृष्ठभूमि तैयार कर रही थीं। भारत छोड़ो आंदोलन 1942 इसी ऐतिहासिक संदर्भ का परिणाम था, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को अंतिम और निर्णायक दिशा प्रदान की। यह आंदोलन

केवल एक राजनीतिक पहल नहीं था, बल्कि यह भारतीय जनता की उस सामूहिक चेतना का प्रतीक था, जो अब औपनिवेशिक शासन को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी।

भारत छोड़ो आंदोलन की विशेषता यह थी कि यह एक संगठित राजनीतिक नेतृत्व के साथ-साथ व्यापक जनसहभागिता पर आधारित था। यद्यपि आंदोलन के प्रारंभ में ही शीर्ष नेतृत्व को गिरफ्तार कर लिया गया, फिर भी यह आंदोलन स्वतःस्फूर्त रूप से पूरे देश में फैल गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्रवादी चेतना अब केवल नेताओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह समाज के विभिन्न वर्गों में गहराई तक समाहित हो चुकी थी। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इस आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, कारणों, स्वरूप और प्रभावों का समालोचनात्मक विश्लेषण करना है।

1.1 द्वितीय विश्व युद्ध और औपनिवेशिक संकट

भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि को समझने के लिए द्वितीय विश्व युद्ध के प्रभावों का विश्लेषण अत्यंत आवश्यक है। 1939 में जब ब्रिटेन ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की, तब भारत को बिना किसी परामर्श के इस युद्ध में शामिल कर लिया गया। इस निर्णय ने भारतीय नेताओं और जनता के बीच असंतोष को जन्म दिया, क्योंकि यह भारतीय स्वायत्तता की पूर्ण उपेक्षा का प्रतीक था।

युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार ने भारत के संसाधनों का व्यापक उपयोग किया, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था पर गंभीर प्रभाव पड़ा। महँगाई में तीव्र वृद्धि हुई, आवश्यक वस्तुओं की कमी उत्पन्न हुई और बेरोजगारी बढ़ी। किसानों और श्रमिकों पर इसका विशेष प्रभाव पड़ा, क्योंकि उनकी आय स्थिर रही जबकि जीवनयापन की लागत बढ़ती गई। इस आर्थिक संकट ने समाज के विभिन्न वर्गों में असंतोष को और अधिक गहरा किया।

इसके अतिरिक्त, युद्धकालीन नीतियों के तहत सरकार ने दमनात्मक उपायों को भी अपनाया। प्रेस पर नियंत्रण, नागरिक स्वतंत्रताओं पर प्रतिबंध और राजनीतिक गतिविधियों पर रोक ने जनता में आक्रोश को बढ़ाया। इस प्रकार, द्वितीय विश्व युद्ध ने एक ऐसे औपनिवेशिक संकट को जन्म दिया, जिसमें ब्रिटिश शासन की वैधता पर प्रश्नचिह्न लगने लगा।

1.2 राजनीतिक परिस्थितियाँ और क्रिप्स मिशन की असफलता

युद्धकालीन परिस्थितियों में भारतीय नेताओं ने ब्रिटिश सरकार से यह अपेक्षा की थी कि वह भारत को स्वशासन की दिशा में ठोस कदम उठाएगी। इसी संदर्भ में 1942 में क्रिप्स मिशन भारत भेजा गया, जिसका उद्देश्य भारतीय नेताओं के साथ समझौता करना था। किन्तु इस मिशन के प्रस्ताव भारतीयों की अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरे।

क्रिप्स मिशन ने युद्ध के बाद भारत को स्वतंत्रता देने का अस्पष्ट आश्वासन दिया, किन्तु तत्काल सत्ता हस्तांतरण का कोई प्रावधान नहीं था। इसके अतिरिक्त, प्रांतों को अलग होने का विकल्प देने जैसे प्रस्तावों ने भारतीय नेताओं के बीच असंतोष उत्पन्न किया। इन प्रस्तावों को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और अन्य संगठनों ने अस्वीकार कर दिया।

क्रिप्स मिशन की असफलता ने यह स्पष्ट कर दिया कि ब्रिटिश सरकार भारत को तत्काल स्वतंत्रता देने के लिए तैयार नहीं है। इस घटना ने भारतीय नेताओं और जनता के बीच निराशा और आक्रोश को और अधिक बढ़ा दिया। परिणामस्वरूप, यह भावना प्रबल हुई कि अब केवल व्यापक जनआंदोलन के माध्यम से ही स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है।

1.3 नेतृत्व, विचारधारा और “करो या मरो” का आह्वान

भारत छोड़ो आंदोलन का वैचारिक आधार राष्ट्रीय स्वतंत्रता की तत्काल मांग पर आधारित था। इस आंदोलन का नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया, जिन्होंने “करो या मरो” का नारा दिया। यह नारा केवल एक राजनीतिक संदेश नहीं था, बल्कि यह एक गहन नैतिक और मनोवैज्ञानिक प्रेरणा थी, जिसने लोगों को अपने लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पण के लिए प्रेरित किया।

गांधी का मानना था कि अब समय आ गया है जब भारतीयों को किसी भी प्रकार के समझौते के बिना स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना चाहिए। उन्होंने अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों को बनाए रखते हुए एक व्यापक जनआंदोलन का आह्वान किया। हालांकि, आंदोलन शुरू होते ही अधिकांश राष्ट्रीय नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया, जिससे केंद्रीय नेतृत्व का अभाव उत्पन्न हो गया।

इस स्थिति में आंदोलन का नेतृत्व स्थानीय स्तर पर चला गया, जिससे यह अधिक विकेन्द्रीकृत और स्वतःस्फूर्त बन गया। विभिन्न क्षेत्रों में लोगों ने अपने-अपने तरीके से आंदोलन को आगे बढ़ाया। यह

दर्शाता है कि राष्ट्रवादी चेतना अब इतनी प्रबल हो चुकी थी कि वह बिना केंद्रीय नेतृत्व के भी आंदोलन को जारी रख सकती थी।

1.4 जनविद्रोह का स्वरूप और व्यापकता

भारत छोड़ो आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसका जनविद्रोह के रूप में विकसित होना था। यह आंदोलन केवल एक संगठित राजनीतिक अभियान नहीं रहा, बल्कि यह व्यापक जनआक्रोश का प्रतीक बन गया। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में लोगों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

इस आंदोलन में छात्रों, महिलाओं, किसानों और श्रमिकों की भागीदारी उल्लेखनीय थी। कई स्थानों पर लोगों ने सरकारी संस्थानों का बहिष्कार किया, संचार व्यवस्था को बाधित किया और औपनिवेशिक प्रशासन को चुनौती दी। कुछ क्षेत्रों में समानांतर सरकारों की स्थापना भी की गई, जो इस बात का संकेत था कि जनता केवल विरोध तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह वैकल्पिक शासन की कल्पना भी कर रही थी।

हालांकि, आंदोलन की प्रकृति पूरी तरह अहिंसात्मक नहीं रही। नेतृत्व की अनुपस्थिति और व्यापक जनआक्रोश के कारण कई स्थानों पर हिंसात्मक घटनाएँ भी हुईं। यह दर्शाता है कि आंदोलन का स्वरूप जटिल और बहुआयामी था, जिसमें विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएँ शामिल थीं।

1.5 दमन, प्रतिक्रिया और ऐतिहासिक महत्व

ब्रिटिश सरकार ने भारत छोड़ो आंदोलन को दबाने के लिए कठोर उपाय अपनाए। बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियाँ की गईं, नेताओं को नजरबंद किया गया और कई स्थानों पर बल प्रयोग किया गया। प्रेस पर सेंसरशिप लगाई गई और संचार माध्यमों को नियंत्रित किया गया।

इन दमनात्मक उपायों के बावजूद आंदोलन पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। यह विभिन्न रूपों में जारी रहा और जनता के भीतर स्वतंत्रता की भावना को और अधिक सुदृढ़ करता गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह आंदोलन केवल एक क्षणिक प्रतिक्रिया नहीं था, बल्कि यह भारतीय समाज में गहराई तक व्याप्त राष्ट्रवादी चेतना का परिणाम था।

भारत छोड़ो आंदोलन का ऐतिहासिक महत्व इस तथ्य में निहित है कि इसने ब्रिटिश शासन की वैधता को गहराई से कमजोर कर दिया। इस आंदोलन ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत पर शासन करना अब संभव नहीं है, क्योंकि जनता स्वतंत्रता के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है।

अतः यह कहा जा सकता है कि भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अंतिम और निर्णायक चरण था, जिसने औपनिवेशिक शासन के अंत की दिशा में मार्ग प्रशस्त किया। यह आंदोलन न केवल एक राजनीतिक घटना थी, बल्कि यह भारतीय जनता की सामूहिक चेतना, साहस और स्वतंत्रता के प्रति अटूट संकल्प का प्रतीक था।

2. साहित्य समीक्षा

चंद्र (2009) ने भारत छोड़ो आंदोलन का विश्लेषण करते हुए यह तर्क दिया कि यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक निर्णायक चरण था, जिसने राष्ट्रवाद को एक व्यापक जनविद्रोह के रूप में रूपांतरित किया। उनके अनुसार इस आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी व्यापक जनसहभागिता थी, जिसमें विभिन्न सामाजिक वर्गों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यद्यपि यह आंदोलन तत्काल स्वतंत्रता प्राप्त करने में सफल नहीं हुआ, फिर भी इसने औपनिवेशिक शासन की वैधता को गंभीर रूप से कमजोर किया और स्वतंत्रता की प्रक्रिया को तेज किया।

सरकार (1983) ने भारत छोड़ो आंदोलन का आलोचनात्मक अध्ययन करते हुए यह बताया कि इस आंदोलन में संगठनात्मक कमजोरी और नेतृत्व की अनुपस्थिति एक प्रमुख समस्या थी। उनके अनुसार शीर्ष नेताओं की गिरफ्तारी के कारण आंदोलन स्वतःस्फूर्त रूप धारण कर गया, जिससे इसकी दिशा और नियंत्रण कमजोर हो गया। फिर भी, उन्होंने यह स्वीकार किया कि यह आंदोलन जनआक्रोश की तीव्र अभिव्यक्ति था, जिसने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध व्यापक असंतोष को उजागर किया।

ब्राउन (1994) ने भारतीय राजनीति के विकास के संदर्भ में भारत छोड़ो आंदोलन का विश्लेषण करते हुए यह कहा कि इस आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रवाद को एक नई ऊर्जा प्रदान की। उनके अनुसार गांधी के नेतृत्व में दिया गया "करो या मरो" का नारा जनता के लिए एक प्रेरणास्रोत बना, जिसने उन्हें संघर्ष के लिए प्रेरित किया। उन्होंने यह भी बताया कि इस आंदोलन ने भारतीय राजनीति को अधिक जनोन्मुख और सक्रिय बनाया।

गुहा (2007) ने भारतीय राष्ट्रवाद के विकास का अध्ययन करते हुए यह तर्क दिया कि भारत छोड़ो आंदोलन ने राष्ट्रवाद को सामाजिक स्तर पर गहराई तक पहुंचाया। उनके अनुसार इस आंदोलन में किसानों, श्रमिकों और छात्रों की भागीदारी ने इसे एक व्यापक सामाजिक आंदोलन बना दिया। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि इस जनसहभागिता ने राष्ट्रवाद को स्थायी आधार प्रदान किया।

मेटकाफ (1995) ने औपनिवेशिक विचारधाराओं के संदर्भ में इस आंदोलन का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि भारत छोड़ो आंदोलन ने ब्रिटिश शासन की वैचारिक नींव को चुनौती दी। उनके अनुसार इस आंदोलन ने यह स्पष्ट कर दिया कि औपनिवेशिक सत्ता की वैधता अब समाप्त हो रही है और भारतीय जनता स्वतंत्रता के लिए तैयार है।

बोस (2015) ने दक्षिण एशिया के आधुनिक इतिहास में इस आंदोलन की भूमिका का विश्लेषण करते हुए यह तर्क दिया कि भारत छोड़ो आंदोलन ने राष्ट्रवाद को एक भावनात्मक और सांस्कृतिक आयाम प्रदान किया। उनके अनुसार इस आंदोलन ने लोगों के भीतर स्वतंत्रता के प्रति गहरी प्रतिबद्धता विकसित की, जिससे राष्ट्रवाद अधिक प्रभावशाली बना।

बेयली (1988) ने भारतीय समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया का अध्ययन करते हुए यह बताया कि इस आंदोलन ने सामाजिक संरचनाओं को भी प्रभावित किया। उनके अनुसार जनसहभागिता के कारण पारंपरिक सामाजिक सीमाएँ कमजोर हुईं और विभिन्न वर्गों के बीच एक नई प्रकार की एकता विकसित हुई, जिसने राष्ट्रवाद को मजबूत किया।

रॉय (2011) ने आर्थिक दृष्टिकोण से भारत छोड़ो आंदोलन का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों के कारण उत्पन्न असंतोष ने इस आंदोलन को गति दी। उनके अनुसार महंगाई, बेरोजगारी और संसाधनों की कमी ने लोगों को आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

सेन (1981) ने गरीबी और सामाजिक असमानता के संदर्भ में इस आंदोलन का अध्ययन करते हुए यह तर्क दिया कि आर्थिक समस्याएँ जनसहभागिता का प्रमुख कारण थीं। उनके अनुसार लोगों ने इस आंदोलन को अपने अधिकारों की प्राप्ति के साधन के रूप में देखा, जिससे उनकी भागीदारी बढ़ी।

हबीब (2010) ने ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इस आंदोलन का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि भारत छोड़ो आंदोलन ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध एक व्यापक प्रतिरोध को संगठित किया। उनके

अनुसार इस आंदोलन ने विभिन्न वर्गों और समुदायों को एकजुट किया और राष्ट्रवाद को सशक्त दिशा प्रदान की।

लो (1993) ने राजनीतिक आंदोलनों के अध्ययन में भारत छोड़ो आंदोलन को एक महत्वपूर्ण उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार यह आंदोलन एक ऐसा जनविद्रोह था, जिसमें संगठित और स्वतःस्फूर्त दोनों तत्व शामिल थे। उन्होंने यह भी बताया कि इस आंदोलन ने औपनिवेशिक शासन की प्रशासनिक संरचना को चुनौती दी।

मूर (1994) ने औपनिवेशिक शासन के अंत के संदर्भ में भारत छोड़ो आंदोलन का विश्लेषण करते हुए यह तर्क दिया कि इस आंदोलन ने ब्रिटिश शासन को यह एहसास दिलाया कि भारत पर शासन करना अब संभव नहीं है। उनके अनुसार इस आंदोलन ने स्वतंत्रता की प्रक्रिया को निर्णायक रूप से प्रभावित किया।

तालिका १: साहित्य समीक्षा का सारांश और मुख्य निष्कर्ष

क्रम संख्या	**साहित्य संदर्भ**	**प्रमुख विषय**	**मुख्य निष्कर्ष**
1.	चंद्र (2009)	जनविद्रोह और राष्ट्रवाद	आंदोलन ने औपनिवेशिक वैधता को कमजोर किया
2	सरकार (1983)	संगठनात्मक कमजोरी	तृत्व अभाव से आंदोलन स्वतःस्फूर्त हुआ
3	ब्राउन (1994	जन-राजनीति	आंदोलन ने जनसक्रियता को बढ़ाया
4	गुहा (2007)	सामाजिक विस्तार	विभिन्न वर्गों की भागीदारी से राष्ट्रवाद मजबूत हुआ
5	मेटकाफ (1995)	वैचारिक चुनौती	औपनिवेशिक सत्ता की वैधता को चुनौती मिली
6	बोस (2015)	सांस्कृतिक आयाम	राष्ट्रवाद भावनात्मक रूप से सशक्त हुआ
7	बेयली (1988)	सामाजिक परिवर्तन	सामाजिक एकता और संरचनात्मक बदलाव हुए

8	रॉय (2011	आर्थिक कारक	आर्थिक संकट ने आंदोलन को प्रेरित किया
9	सेन (1981)	गरीबी और असमानता	आर्थिक समस्याओं से जनभागीदारी बढ़ी
10	हबीब (2010)	ऐतिहासिक प्रतिरोध	व्यापक राष्ट्रीय एकता विकसित हुई
11	लो (1993)	राजनीतिक स्वरूप	संगठित और स्वतःस्फूर्त तत्वों का समावेश हुआ
12	मूर (1994)	औपनिवेशिक अंत	आंदोलन ने स्वतंत्रता प्रक्रिया को तेज किया

3. निष्कर्ष

भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक निर्णायक और परिवर्तनकारी घटना के रूप में उभरता है। इस आंदोलन ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीय जनता अब औपनिवेशिक शासन को किसी भी रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उत्पन्न आर्थिक संकट, राजनीतिक असंतोष और क्रिप्स मिशन की असफलता ने इस आंदोलन के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ तैयार कीं। महात्मा गांधी के "करो या मरो" के आह्वान ने इस जनआक्रोश को एक संगठित दिशा प्रदान की, जिससे आंदोलन देशभर में तीव्र गति से फैल गया।

यद्यपि आंदोलन के प्रारंभ में ही शीर्ष नेतृत्व की गिरफ्तारी के कारण इसका स्वरूप स्वतःस्फूर्त और विकेन्द्रीकृत हो गया, फिर भी इसकी व्यापकता और प्रभावशीलता में कोई कमी नहीं आई। विभिन्न सामाजिक वर्गों की सक्रिय भागीदारी ने इसे एक वास्तविक जनआंदोलन का स्वरूप दिया। ब्रिटिश शासन द्वारा अपनाए गए दमनात्मक उपाय भी इस आंदोलन की भावना को समाप्त नहीं कर सके।

अंततः, भारत छोड़ो आंदोलन ने औपनिवेशिक शासन की वैधता को गहराई से कमजोर किया और यह स्पष्ट कर दिया कि भारत पर शासन करना अब संभव नहीं है। इस प्रकार, यह आंदोलन न केवल स्वतंत्रता संग्राम का अंतिम चरण था, बल्कि यह भारतीय राष्ट्रवाद की परिपक्वता और जनता की अटूट संकल्प शक्ति का प्रतीक भी था।

संदर्भ सूची

चंद्र, बी. (2009). इंडियाज़ स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस.

सरकार, एस. (1983). मॉडर्न इंडिया.

ब्राउन, जे. (1994). मॉडर्न इंडिया.

गुहा, आर. (2007). इंडिया आफ्टर गांधी.

मेटकाफ, टी. आर. (1995). आइडियोलॉजीज ऑफ द राज.

बोस, एस. (2015). मॉडर्न साउथ एशिया.

बेयली, सी. ए. (1988). इंडियन सोसाइटी.

रॉय, टी. (2011). इकोनॉमिक हिस्ट्री.

सेन, ए. (1981). पॉवर्टी स्टडीज़.

हबीब, आई. (2010). हिस्टोरिकल स्टडीज़.

लो, डी. ए. (1993). पॉलिटिकल मूवमेंट्स.

मूर, आर. जे. (1994). एंड ऑफ एम्पायर.